The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 1 | January 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

सिकलसेल का जनजातियों पर प्रभाव एवं उन्मूलन

डॉ.राहुल भारती
शासकीय महाविद्यालय जुन्नारदेव

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:
समुदाय, आदिवासी जनजातियों, समूह

ABSTRACT

सिकल सेल भारत के कई आदिवासी समूहों में व्यापक मात्रा में पाया जाता है। जनजातीय लोगों के बीच 86 जनजातियों में से लगभग एक को सिकल सेल है, जो मध्य, पश्चिमी और दक्षिणी भारत में अधिक है। हालांकि, अब सिकल सेल सभी जातियों और समुदायों में पाया जाने लगा है।सिकल सेल रोग के प्रसार वाले राज्यों में गुजरात, राजस्थान, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, उत्तर प्रदेश और असम शामिल हैं।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.14845072

प्रस्तावना

रक्त एक विशेष तरल है जो हमारे शरीर में ऑक्सीजन पहुँचाने का काम करता है। इसमें चार मुख्य घटक होते हैं: प्लाज्मा, आरबीसी, डब्ल्यूबीसी और प्लेटलेट्स। हीमोग्लोबिन एक प्रोटीन है जो आरबीसी में पाया जाता है और ऑक्सीजन को ले जाने में मदद करता है।

सिकल सेल रोग एक आनुवंशिक विकार है जिसमें आरबीसी की आकार बदल जाती है और वे सिकल या अधचंद्र की तरह दिखने लगती हैं। यह विकार जीन में म्यूटेशन के कारण होता है जिससे असामान्य हीमोग्लोबिन बनता

है। सिकल सेल रोग से पीड़ित लोगों में एनीमिया, संक्रमण, पीड़ा और सूजन जैसी समस्याएं हो सकती हैं। इसके अलावा, यह विकार मस्तिष्क, यकृत, फेफड़े आदि समेत विभिन्न अंगों को प्रभावित कर सकता है। सिकल सेल रोग एक आनुवंशिक विकार है जो हीमोग्लोबिन की असामान्य संरचना के कारण होता है। यह विकार बीटा-ग्लोबिन जीन में म्यूटेशन के कारण होता है, जिससे असामान्य हीमोग्लोबिन बनता है। सिकल सेल रोग के मरीजों में लाल रक्त कोशिकाएं सिकल या अधचंद्र की तरह दिखने लगती हैं। यह विकार विरासत में मिलता है और इसके लक्षण व्यक्ति की आयु, लिंग और अन्य कारकों पर निर्भर करते हैं। सिकल सेल रोग के मरीजों में एनीमिया, संक्रमण, पीड़ा और सूजन जैसी समस्याएं हो सकती हैं। इसके अलावा, यह विकार मस्तिष्क, यकृत, फेफड़े आदि समेत विभिन्न अंगों को प्रभावित कर सकता है। सिकल सेल रोग का निदान रक्त परीक्षण द्वारा किया जा सकता है। इसके लिए विभिन्न प्रकार के रक्त परीक्षण किए जा सकते हैं, जिनमें हीमोग्लोबिन इलेक्ट्रोफोरेसिस और हीमोग्लोबिन एफ प्लस सी शामिल हैं। सिकल सेल रोग का उपचार व्यक्ति की आयु, लिंग और अन्य कारकों पर निर्भर करता है। इसके लिए विभिन्न प्रकार के उपचार किए जा सकते हैं, जिनमें रक्त संचार, ऑक्सीजन थेरेपी और दर्द निवारक दवाएं शामिल हैं।

मध्यप्रदेश में सिकलसेल-

भारत में सिकल सेल रोग की समस्या व्यापक है। यह विकार कई जनजातीय समूहों में पाया जाता है, जिनमें आदिवासी और अनुसूचित जनजातियाँ शामिल हैं।

भारत में β-थैलेसीमिया की दर 3-4% है, जो कि विश्व के अन्य हिस्सों की तुलना में अधिक है। यह विकार विशेष रूप से सिंधी, पंजाबी, गुजराती, बंगाली और महार समुदायों में पाया जाता है। हीमोग्लोबिन ई, जो पश्चिमी राज्यों में पाया जाता है, की दर 48% तक पहुँच गई है। लगभग 27 राज्यों में सिकल सेल एनीमिया के प्रसार को रिपोर्ट किया गया है। हीमोग्लोबिन डी, जो पूर्वोत्तर राज्यों में आम है, की दर 50% तक पहुँच गई है। यह विकार पूर्वी राज्यों में भी पाया जाता है, जिनमें पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश शामिल हैं।

भारत में हर साल लगभग 10,000 बच्चों का जन्म थैलेसीमिया के साथ होता है, जिनमें से लगभग 5,200 बच्चों का जन्म सिकल सेल रोग के साथ होता है।

मध्य प्रदेश में सिकल सेल एनीमिया मध्य प्रदेश के कुछ जिलों में बहुत अधिक पाया जाता है। टीकमगढ़ जिले में सिकल सेल जीन का व्यापक प्रसार देखा गया है, जहां कुछ स्थानों पर इसकी दर 33 प्रतिशत तक है। यह स्वास्थ्य प्रणाली पर बहुत बड़ा दबाव डालता है और लागत और संसाधनों के संदर्भ में बहुत बड़ा बोझ है।

सिकल सेल एनीमिया मध्य प्रदेश के कुछ जनजातियों जैसे प्रधान, बरेली, पनिका, बरेली, भिलाला झारिया और मेंहरा में बहुत अधिक पाया जाता है। मध्य प्रदेश के अलीराजपुर, बैतूल, छिंदवाड़ा, मंडला, बडवानी, शाजापुर और झाबुआ जिलों में जन्म दर में असमानता देखी गई है। एक अध्ययन के अनुसार, मध्य प्रदेश में आभारी आबादी में वंशानुगत हीमोग्लोबिन (एचबी) म्यूटेशन की उच्च दर है, जो असमान रुग्णता और उच्च मृत्यु दर का कारण बनती है। इस अध्ययन में व्यक्तियों को शामिल किया गया था, जिनमें डिंडोरी, छिंदवाड़ा और मंडला जिलों के जनजातीय स्कूलों और आश्रमों के छात्र शामिल थे।

विभिन्न स्तरों पर उन्मूलन कार्यक्रम-

1.**राज्यों एवं जिला स्तर**

राज्य, जिला और ब्लॉक स्तर रोग कार्यक्रम कमेटी का गठन किया जाएगा। यह राज्य/केंद्र शासित प्रदेश में की निगरानी, तकनीकी सहायता और रोग निगरानी को सुनिश्चित करेगी। इसके अध्यक्ष राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के राज्य मिशन निदेशक और सह-अध्यक्ष जनजाति कार्य विभाग के प्रमुख होंगे।

2. **आयुष्मान भारत हेल्थ सेंटर**

आयुष्मान भारत - हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर में स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए एक व्यापक योजना तैयार की गई है। इस योजना के तहत, देशभर में 1.5 लाख से अधिक स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र स्थापित किए जाएंगे, जो प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करेंगे।

3. **आईसीएमआर, जैव प्रौद्योगिकी विभाग और अन्य अनुसंधान संस्थानों की भूमिका-**

सिकलसेल रोग ।मरीजों की जांच करना और उनके चिकित्सा जांच में उनको सहायता प्रदान करना।

4. **मध्य प्रदेश जन अभियान (एमपीजेएपी) द्वारा की जाने वाली गतिविधि**

1. स्किल सेल स्क्रीनिंग सामुदायिक सर्वेक्षण
2. जागरूकता अभियान
3. सामुदायिक मोबिलाइजेशन
4. पोस्ट स्क्रीनिंग

जनजातियों पर होने वाले सामाजिक प्रभाव

1. समुदाय का नष्ट होना-

जनजातियों में सिकल सेल जैसी गंभीर बीमारियां जो बिजली दर पीढ़ी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी हस्तांतरित हो रही है संभवत यह है आशंका एवं तथ्य यह रहेगा कि इस समुदाय की आने वाली पीढ़ी कुछ समय पश्चात वह नष्ट हो जाएगी अगर उसका समय पर इलाज नहीं किया गया।

2. जनसंख्या में कमी होना-

किसी भी जनजातीय जनसंख्या में सामाजिक तौर पर हम यह देखें कि अगर वह किसी ऐसी बीमारी से पीड़ित है जो उन्हें नष्ट कर रही है जैसे सिकल सेल यह कुछ समय पश्चात जनजातियों की जनसंख्या को गंभीर बीमारी से उनकी जनसंख्या में काफी कमी आएगी।

3. सामाजिक बहिष्कार-

जनजातियों में यह देखा जाता है की वह अपने ही समुदाय में ही विवाह करते हैं एवं कुछ जातियां एवं गोत्र को देख कर विवाह किया जाता है किंतु स्किल सेल जैसी अनुवांशिक बीमारी जनजातियों में एक सामाजिक बहिष्कार देखने को मिलता है।

4. सांस्कृतिक बिखराव-

जनजातियों में सिकल सेल देसी गंभीर बीमारियां होने से जनजातीय समुदाय में सांस्कृतिक बिखराव देखने को मिल सकता है क्योंकि यह है पुरी तरह से समुदाय को नष्ट कर देगी जिससे संस्कृत बिखराव देखने को मिल सकता है।

सुझाव एवं निष्कर्ष

जनजातियों में स्किल सेल जैसी गंभीर बीमारियां होने पर उन्हें एक राष्ट्रीय स्तर पर एक योजना होना आवश्यक है जिससे लगातार उनकी मॉनिटरिंग एवं क्रियान्वयन हो सके हम बीमारियों को प्रथम स्तर पर ही पहचान कर उसका निवारण कर सके। स्किल सेल के लिए गांव इस तरह एवं सामुदायिक स्तर पर एक जागरूकता अभियान प्रारंभ कर उन्हें उसके प्रारंभिक स्वरूप को ही प्रथम स्तर पर पहचान जावे और नाटक जैसे कार्यक्रम करके उन्हें जागरूक किया जाए की जिसे सिकल सेल जैसी बीमारियां हैं उनसे विवाह संबंध ना किया जाए एवं उपचार प्रक्रिया को अपनाये।

संदर्भ सूची

1.उरारे बी.पी. ने "सिकल सेल जीन परिदृश्य: एक स्वास्थ्य दृष्टिकोण" हेल्थकेयर इन्फो 2012, 10.4172/2157-7420.1000114

2.स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय: भारत में हीमोग्लोबिनोपैथी की रोकथाम और नियंत्रण - थैलेसीमिया, सिकल सेल रोग और अन्य प्रकार के हीमोग्लोबिन, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन,

3. Sickle cell anemia program manual, Epidemic branch, Family Health and Medical Services , Gandhinagar Gujarat

4.एचटीटीपी://एनएचएआईओवी.इन/हिंदी/पीडीएफ/कार्यक्रम/आरबीआई/रिव्यू_डॉक्यूमेंट/हीमोग्लोबिनोपैथी_निदेशिका, 2016

5.https://nhsrcindia.org/sites/default/files/2021-07/Tribal%20Health%20in%20India-Detailed%20Report.pdf